http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2024) वर्ष 4, अंक 3, 1-3

Article ID: 361

लोबिया में लगने वाले कीट एवं रोग नियंत्रण

शुभम पटेल[1], डा. हेमंत कुमार सिंह[2], श्याम प्रकाश[3], सुधांशु सिंह[4]

[1]शोध छात्र, [2]सह – प्राध्यापक (पादप रोग विज्ञान विभाग)
[3]शोध छात्र, (सब्जी विज्ञान विभाग)
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उ. प्र.)
[4](शोध छात्र, सब्जी विज्ञान विभाग)
सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)

दलहनी सब्ज़ियों में लोबिया एक प्रमुख सब्जी की फसल है। हरी एवं अपरिपक्व फलियों एवम् सूखे बीजों का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा लोबिया को बिस्कुट बनाने के लिए बेकिंग पाउडर के रूप में शाकीय दूध बनाने में प्रयोग करते हैं। मृदा की उर्वराशक्ति बढ़ाने एवं मृदा क्षरण को रोकने के लिए आवरण फसल के रूप में भी इसकी खेती की जाती है। इसमें महत्वपूर्ण पोशक तत्व जैसे प्रोटीन, शर्करा, वसा, विटामिन तथा खनिज प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। लोबिया की खेती ती के लिए बलुई दोमट से लेकर दोमट मिट्टी जिसका पी एच मान 6.0-70 के मध्य हो उपयुक्त है। खेत की 2-3 जुताई करके पाटा लगा देते हैं ताकि खेत की मिट्टी मुरमुरी हो जाय।

प्रमुख कीट एवं नियंत्रण :

हरा फुदका (जैसिड) :

यह पत्ती की निचली सतह पर बड़ी संख्या में पाया जाता है। शिशू तथा प्रौढ दोनों पत्ती की निचली सतह से रस चूस कर हानि पहुंचाता है जिसके फलस्वरूप पत्ती सिकुड़ जाती है और पौधे की बुढ़वार रुक जाती है।

नियंत्रण:

बुआई के समय इमिडाक्लोप्रिड 48 एफएस / 5-9 मिली/किग्रा बीज या इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्लूएस / 5-10 ग्राम/किग्रा बीज या थायामधोकनाम 70 डब्लूएस 3-5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें। आवश्यकतानुसार किसी भी कीटनाशक जैसे इमिडाक्लोप्रिड (0.5 मिली/लीटर या थायामेथेक्जाम 4035 ग्राम/लीटर या डाइमेथोएट @ 25 मिली की दर से 10-15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए।

काला माहूं काले रंग के शिशु एवं वयस्क दोनों क्षतिकारक कारक होते हैं। जो नये पत्तियों तथा शाखाओं का रस चूसता है। जिससे फसले की बढ़वार रूक जाती है। नियंत्रण :पौधे के तने अथवा अन्य भाग जहाँ माँहू का कालोनी दिखाई दें उसको तोडकर नस्ट कर दें। इमिडाक्लोरोपिड @ 05 मिली/लीटर या थायामेथेक्जाम @ 0.35 ग्राम/लीटर या डाइमेथोएट 30 ईसी (@ 25 मि.ली/लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए।

हड्डा बीटिल:

इस कीट का वयस्क तथा गंग (राब) फसल की पत्तियों को खाकर हानि पहुंचाता है। पत्ती एक जाल के ककाल के रूप में दिखने लगती है। कुछ दिनों के बाद पत्तियों सूखकर गिर जाती है। इसका प्रतिकूल असर पैदावार पर पड़ता है।

नियंत्रण:

वयस्क तर्धा भूग (ग्रब) को पकड़कर के उसे नश्ट कर दें। इस कीड़े के नियंत्रण के लिए कोई भी विशिष्ट कीटनाशंक नहीं है फिर भी इसके नियंत्रण हेतु कीटनाशक जैसे थायोक्लोप्रिड 0.65 मिली/ली इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 10 ग्राम सकीय सत्व/हे० का प्रयोग तब करें जब कीड़े को सख्या बहुत ज्यादा हो।

फली छेदकः
सबसे ज्यादा क्षति पहुंचाने बाला यह मुख्य कीट है जिससे लगभग 45-50 प्रतिशत की क्षति होती है। शुरू की अवस्था में इसकी सुंडी फूले घर र अलग-अलग फूलों पर फैल जाते हैं। घर समूह के होते हैं जो आगे चलकर और बाद की जेवल्या में फलियों को उनके अन्दर छेद करके खाते हैं। जिससे फलियों बिक्री हेतु अनुफ्युक्त हो जाती हैं तथा पैदावार पर विपरीत प्रभाव पडता है।

नियंत्रण:
क्षतिग्रस्त, फूल और फलियों को पौधों से निकालकर नश्ट करे। एन.एस. के.ई 4 प्रतिशत या बैसिलस चूजेसिस किस्म कुर्सटाकी (बी.टी.) @ 2.5 ग्रा/ली को पुश्यावस्था के दौरान छिडकाव करें। कीटनाशक जैसे रेनेक्सपायर 18.5 एससी @ 03 मिली/ली या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 0.45 ग्राम/लीटर या इन्डाक्साकार्ब 14.5 एससी (@ 0.75 मिली/लीटर वा क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी (@2 मिली/लीटर या डेल्टानेधिन 28 ईसी : मिली/लीटर को 10 दिनों के अन्तराल पर दो या तीन बार छिडकाव करें।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण
कॉलर रॉट :
इस रोग का प्रारम्भिक लक्षण पौधों पर पड़ता है जो नमी को अधिकता के कारण जमीन की सतह से प्रारम्भ होता है और सम्पूर्ण छाल सड़न से से ढक जाती है। जिससे संक्रमित भाग पर सफेद फफूँद वृद्धि हो जाती है जो छोटे-छोटे टुकड़ों में बनकर धीरे-धीरे बदल जाती है। जो मिट्टी में जीवित रहते है और उपयुक्त वातावरण मिलने पर जाती है। स्क्लेरोटिनिया में पुनः सक्रिय हो जाती है।

नियंत्रण:
बीजों का उपचार बुआई से पूर्व ट्राईकोडर्मा 5 ग्राम / किग्रा की दर से करनी चाहिए। खरपतवार नियंत्रण समय-समय पर करते रहे। मुआई के 20 दिन उपरान्त ट्राईकोडर्मा के घोल से (10 ग्राम/लीटर पानी) जड़ों को तर करना चाहिए। बोड़े में त्वरित रोग नियंत्रण के लिए संध्या के समय जड़ के समीप कीपर आक्सीक्लोराईड 4 ग्राम/लीटर पानी की दर से जड़ों का तर करें। रस्ट यह फफूंद जनित रोग है जो पौधों के सभी ऊपरी भाग पर छोटे हल्के उभरे हुए धब्बे के रूप में दिखाई देते हैं तने पर साधारणत लम्बे उभरे हुए धब्बे बसते हैं।

नियंत्रण :
खेत में औसतन दो धब्बे प्रति पत्तियों के दिखने पर फफूंदनाशक जैसे- पलुसिलाजोल / हेक्साकोनाजोल / बीटरटेनॉल / ट्राईआडीमेफॉन 1मि.ली. 5-7 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। प्रति लीटर पानी का

स्क्लेरोटीना ब्लाईट:
यह फफूँदजनित रोग है जो लोबिया की फसल को काफी हानि पहुंचाता है। प्रारम्भिक अवस्था में लक्षण सफेद होकर सड़ना, बाद में सड़े भाग पर फफूँद का बढ़ना व संक्रमित भाग एवं फलों एवं छिलके के अंदरूनी भाग में जालीनुमा स्क्लेरोटीना का सफेद माइसीलीयम (फफूंद) में परिवर्तित हो जाता है। संक्रमण प्रायः फूलों से शुरू होकर बाद में फलियों तक पहुंचता जाता है।

नियंत्रण: पौधों में पुष्पधारण करने के साथ फफूंदनाशक जैसे कार्बन्डाजिम (ग्राम/लीटर पानी) एवं नैकोजेब (25 ग्राम या कार्बेन्डाजिम नैकोर्जेब 15 ग्राम/लीटर पानी) के घोल का 7-10 दिन के अनाराल पर क्रम से छिड़काव करना आवश्यक है।

लोबिया का विशाणु रोग (गोल्डेन मोजैक) :
यह वायरस जनित रोग है। लक्षण में ऊपरी पत्तियों पर पीले एवं हरे रंग के धब्बे बनते हैं। बाद में अधिकाश पत्तियों पूर्णतया पीली पड़ जाती है। संक्रमित फलियों साधारण हरे रंग से पीली पढ़ जाती है।

नियंत्रण :
इसके नियंत्रण के लिए कार्बोफ्यूरॉन 1.5 कि.ग्रा/हेक्टेयर की मिट्टी में मिलने के उपरान्त बुआई करनी चाहिए। फूल लगने तक इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मिली/लीटर या शायमेथोक्जोत । मिली 3 लीटर पानी के घोल का छिडकाव 7-10 दिन के अंतराल पर करते रहना चाहिए।

बैक्टीरीयल ब्लाईट्स:
यह जीवाणु जनित रोग है, जिसमें संक्रमित उत्तक पीले पड़ जाते हैं एवं मरने के उपरान्त विभिन्न आकार एवं नाप के उभार / धब्बे बनाते हैं। जो बाद में (वर्शा ऋऋतु) बड़े धबे के समान लक्षण पत्तियों पर दिखते हैं। वर्षा ऋतु में फलियों पर भी छोटे चुब्बे बनते हैं

नियंत्रण:
साफ रोगमुक्त एवम् अवरोधी बीजों का प्रयोग करें। बुआई के पूर्व बीजों को स्ट्रेप्टोत्साइक्लीन घोल (100 पी.पी. एन की दर से) 30 मिनट के लिए डुबोने के उपरान्त बुज़ाई करें।

पत्ती का धब्बा रोग:
इसके लक्षण छोटे धब्बों के रूप बनते है एवं धब्बों को घेरे हुए हल्की वृत्ताकार की आकृति होती है। पत्तियों भूरे रंग की होकर सूख जाती हैं। 90 प्रतिशत से अधिक हानि, सामान्यते बीज जनित कबक से होती है।

नियंत्रण:
डाईफनोकोनाजोल मि.ली/लीटर पानी या थायोफेनेट मिथाईल 1 ग्राम/लीटर पानी के दो छिड़काव दस दिनों के अंतराल पर करना चाहिए।